१५ लेस्सापरिणामाणुयोगद्दारं

अहिणंदणमहिवंदिय अहिणंदियतिहुवणं सुहत्तीए ।
लेस्सपरिणामसण्णियमणियोगं वण्णइस्सामो ।। १ ।।

लेस्सापरिणामे त्ति अणुयोगद्दारं काओ लेस्साओ✱ केण सरूवेण काए वड्ढीए हाणीए वा परिणमंति त्ति जाणावणट्ठमागयं । किण्णलेस्साए ताव परिणमणविहाणं वुच्चदे । तं जहा-- किण्णलेस्सियो संकिलिस्समाणो ण अण्णं संकमदि, सट्ठाणे चेव छट्ठाणपदिदेण ठाणसंकमणेण वड्ढदि❂ । किं छट्ठाणपदिदत्तं ? जत्तो ठाणादो संकिलिट्ठो तत्तो ट्ठाणादो अणंतभागब्भहिया असंखेज्जभागब्भहिया संखेज्जभागब्भहिया संखेज्जगुणब्भहिया असंखेज्जगुणब्भहिया अणंतगुणब्भहिया वा लेस्सा होज्ज, एदं छट्ठाणपदिदत्तं । विसुज्झमाणो सट्ठाणे अणंतभागहाणि-असंखे० भागहाणि-संखे० भागहाणि-संखे० गुणहाणि-असंखे० गुणहाणि-अणंतगुणहाणि त्ति छट्ठाणपदिदेण हायदि, णीललेस्साए अणंतगुणहीणेण संकमदि । एवं किण्णलेस्सस्स संकिलेसमाणस्स एक्को वियप्पो किण्णलेस्सवड्ढीए ।

तीनों लोकोंको आनन्दित करनेवाले अभिनन्दन जिनेन्द्रकी अतिशय भक्तिपूर्वक वंदना करके 'लेश्यापरिणाम' संज्ञावाले अनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ।। १ ।।

कौन लेश्यायें किस स्वरूपसे और किस वृद्धि अथवा हानिके द्वारा परिणमण करती हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'लेश्यापरिणाम' अनुयोगद्वार प्राप्त हुआ है । उनमें पहिले कृष्णलेश्याके परिणमनविधानका कथन करते हैं । यथा– कृष्णलेश्यावाला जीव संक्लेशको प्राप्त होता हुआ अन्य लेश्यामें परिणत नहीं होता है, किन्तु षट्स्थानपतित स्थानसंक्रमण द्वारा स्वस्थानमें ही वृद्धिको प्राप्त होता है ।

शंका– षट्स्थानपतितका क्या स्वरूप है ?

समाधान– जिस स्थानसे संक्लेशको प्राप्त हुआ है उस स्थानसे अनन्तभाग अधिक, असंख्यातभाग अधिक, संख्यातभाग अधिक, संख्यातगुणी अधिक, असंख्यातगुणी अधिक और अनन्तगुणी अधिक लेश्याका होना; इसका नाम षट्स्थानपतित है ।

उक्त कृष्णलेश्यावाला जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि; इस प्रकार षट्स्थानपतित स्वरूपसे स्वस्थानमें हानिको प्राप्त होता है । वही अनन्तगुणहानिके द्वारा नीललेश्यारूपसे परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होनेवाले कृष्णलेश्या युक्त

✱ ताप्रतौ 'काउलेस्साओ' इति पाठः । ❂ संकमणं सट्ठाण-परट्ठाणं होदि किण्ण-सुक्काण । वड्ढीसु हि सट्ठाणं उभयं हाणिम्मि सेस उभये वि ।। लेस्साणुक्कस्सादो वरहाणी अवरगादवरवड्ढी । सट्ठाणे अवरादो हाणी णियमा परट्ठाणे ।। संकमणे छट्ठाणा हाणिसु वड्ढीसु होंति तण्णामा । परिमाणं च य पुव्वं उत्तकमं होदि सुदणाणे ।। गो. जी. ५०३-५०५ ।।

विसुज्झमाणस्स दो वियप्पा– किण्णलेस्सहाणीए एक्को, णीललेस्ससंकमे बिदियो▣ चेव । एवं किण्णलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

संपहि णीललेस्सस्स वुच्चदे– णीललेस्सादो संकिलिस्संतो णीललेस्सं छट्ठाण-पदिदेण वड्ढिसंकमट्ठाणेण संकमेइ☼, अधवा किण्णलेस्सं अणंतगुणवड्ढिकमेण परि-णमदि । एवं संकिलेसंतस्स दो वियप्पा । णीललेस्सादो♠ विसुज्झंतो णीललेस्साए छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, काउलेस्साए अणंतगुणहीणहाणीए✿ वि हायमाणो परिणमदि । एवं णीललेस्सादो विसुज्झमाणस्स दो वियप्पा । एवं णीललेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

काउलेस्सस्स वुच्चदे । तं जहा– काउलेस्सियो संकिलिस्संतो सट्ठाणे अणिय-मेण♣ छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, णीललेस्साए अणंतगुणवड्ढीए णियमेण परिणमदि । एवं संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा । काउलेस्सियो विसुज्झमाणो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, तेउलेस्सिए अणंतगुणहीणहाणीए परिणमदि । एवं विसुज्झमाणस्स दो वियप्पा । काउलेस्सस्स संकमणविहाणं समत्तं ।

तेउलेस्सिओ֍ संकिलिस्संतो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, काउलेस्साए

जीवका कृष्णलेश्याकी वृद्धि द्वारा एक विकल्प होता है । उसीके विशुद्धिको प्राप्त होनेपर दो विकल्प होते हैं-- कृष्णलेश्याकी हानिसे एक, और नीललेश्याके संक्रममें दूसरा विकल्प होता है । इस प्रकार कृष्णलेश्यावाले जीवका परिणमनविधान समाप्त हुआ ।

अब नीललेश्यावाले जीवके परिणमनविधानका कथन करते हैं– नीललेश्यासे संक्ले-शको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिसंक्रमस्थानके द्वारा नीललेश्यामें ही संक्रमण करता है । अथवा वह अनन्तगुणवृद्धिके क्रमसे कृष्णलेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होनेपर दो विकल्प होते हैं । नीललेश्यासे विशुद्धिको प्राप्त होनेवाला षट्स्थानपतित हानिके द्वारा नीललेश्याकी हानिको प्राप्त होता है । वह अनन्तगुणहीन हानिके द्वारा हानिको प्राप्त होता हुआ कापोतलेश्या रूपसे परिणत होता है । इस प्रकार नीललेश्यासे विशुद्धिको प्राप्त होनेवालेके दो विकल्प हैं । इस प्रकार नीललेश्यावालेका परिणमनविधान समाप्त हुआ ।

कापोतलेश्यावालेके परिणमनका विधान कहते हैं । यथा– कापोतलेश्यावाला संक्ले-शको प्राप्त होता हुआ अनियमसे षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत होता है । वही अनन्त-गुणवृद्धिके द्वारा नियमसे नीललेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त हुए कापोतलेश्यायुक्त जीवके दो विकल्प हैं । कापोतलेश्यावाला विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्-स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें हानिको प्राप्त होता है । वही अनन्तगुणहीन हानि द्वारा तेजलेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार विशुद्धिको प्राप्त होते हुए कापोतलेश्यावालेके दो विकल्प हैं । कापोतलेश्यावालेके संक्रमणका विधान समाप्त हुआ ।

तेजलेश्यावाला जीव संक्लेशको प्राप्त होकर षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें

▣ अ-काप्रत्योः 'विदिया' इति पाठः । ☼ अ-काप्रत्योः 'संकमे' इति पाठः ।
♠ अ-काप्रत्योः 'णीललेस्सा' इति पाठः । ✿ अ-काप्रत्योः 'हीणाहाणीए' इति पाठः ।
♣ ताप्रतौ 'अ णियमेण' इति पाठः । ֍ अ-काप्रत्योः 'तेउलेस्सिए' इति पाठः ।

अणंतगुणहीणहाणीए परिणमइ। एवं तेउलेस्सस्स संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा। तेउलेस्सिओ विसुज्झमाणो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, पम्मलेस्साए अणंतगुणवड्ढीए परिणमइ। एवं तेउलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं।

संपहि पम्मलेस्साए वुच्चदे। तं जहा– पम्मलेस्सियो विसुज्झमाणो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, सुक्कलेस्साए अणंतगुणवड्ढीए परिणमदि। संकिलिस्समाणओ पम्मलेस्सिओ सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, तेउलेस्साए अणंतगुणहाणीए हायदि। एवं पम्मलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं।

सुक्कलेस्साए उच्चदे। तं जहा– सुक्कलेस्सियो संकिलिस्समाणो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, पम्मलेस्साए अणंतगुणहीणहाणीए परिणमइ। एवं संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा। सुक्कलेस्सियो विसुज्झमाणो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, अण्णलेस्ससंकमो णत्थि। सुक्कलेस्सस्स विसुज्झमाणस्स एक्को चेव वियप्पो। एवं सुक्कलेस्साए परिणमणविहाणं समत्तं।

संकम-पडिग्गहाणं जहण्णुक्कस्सयाणं तिव्व-मंददाए एत्थ अप्पाबहुअं कायव्वं।

हीनताको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणहीन हानिके द्वारा कापोतलेश्यासे परिणत होता है। इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होनेवाले तेजलेश्या युक्त जीवके दो विकल्प हैं। तेजलेश्यायुक्त जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा स्वस्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणवृद्धिके द्वारा पद्मलेश्यासे परिणत होता है। (इस प्रकार विशुद्धिको प्राप्त होनेवाले तेजलेश्यायुक्त जीवके दो विकल्प हैं।) इस प्रकार तेजलेश्यायुक्त जीवके परिणमनका विधान समाप्त हुआ।

अब पद्मलेश्याके परिणमनविधानका कथन करते हैं। यथा पद्मलेश्यायुक्त जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा स्वस्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणवृद्धिके द्वारा शुक्ललेश्यासे परिणत होता है। संक्लेशको प्राप्त होनेवाला पद्मलेश्या संयुक्त जीव षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें हीनताको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणी हानिके द्वारा तेजलेश्यामें जाकर हीनताको प्राप्त होता है। इस प्रकार पद्मलेश्यावालेके परिणमनका विधान समाप्त हुआ।

शुक्ललेश्याके परिणमनविधानका कथन करते हैं। यथा– शुक्ललेश्यावाला संक्लेशको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें हानिको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणहीन हानिके द्वारा पद्मलेश्यासे परिणत होता है इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होते हुए शुक्ललेश्यायुक्त जीवके दो विकल्प हैं। शुक्ललेश्यायुक्त जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा स्वस्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है, उसका अन्य लेश्यामें संक्रम नहीं होता। विशुद्धिको प्राप्त होते हुए शुक्ललेश्यावालेका एक ही विकल्प है। इस प्रकार शुक्ललेश्याका परिणमनविधान समाप्त हुआ।

यहां तीव्र-मंदताकी अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट संक्रम और प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका कथन करते

तं जहा- ताणि किण्ण-णीललेस्साओ पडुच्च वुच्चदे। णीलाए जहण्णयं लेस्सट्ठाणं थोवं। किण्णादो जम्हि णीलाए पडिघेप्पदि तं णीलाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंत- गुणं। किण्णाए जहण्णयं संकमट्ठाणं जहण्णयं च किण्णट्ठाणं दो वि तुल्लाणि अणंत- गुणाणि। णीलाए जहण्णयं संकमट्ठाणमणंतगुणं। किण्णाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणं- तगुणं। णीलाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं। किण्णाए उक्कस्सयं संकमट्ठा- णमणंतगुणं। णीलाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणं उक्कस्सयं णीलट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। किण्णाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं। उक्कस्सयं किण्णलेस्सट्ठा- णमणंतगुणं। एवं किण्ण-णीलाणं संकम-पडिग्गह✠प्पाबहुअं समत्तं।

एत्तो णील-काऊणं संकम-पडिग्गहाणमप्पाबहुअं वुच्चदे। तं जहा-- जहा किण्ण-णीलाणं तहा काउ-णीलाणं वत्तव्वं। णवरि काउलेस्समादिं कादूण वत्तव्वं। एवं णील-काउसंकम-पडिग्गहप्पाबहुअं समत्तं।

संपहि काउ-तेउलेस्साओ पडुच्च अप्पाबहुअं वुच्चदे। तं जहा- काऊण जहण्णओ संकमो जहण्णट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि। तेऊए जहण्णयं ठाणं जहण्णो च संकमो तुल्लो अणंतगुणो। काऊए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं। तेऊए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो। काऊए उक्कस्सयं संकमट्ठाणमणंतगुणं। तेऊए उक्कस्सयं संकमं-

हैं। वह इस प्रकार है- उनका कथन कृष्ण व नील लेश्याओंके आश्रयसे करते हैं। नीललेश्याका जघन्य लेश्यास्थान स्तोक है। नीललेश्याके जिस स्थानमें कृष्णलेश्यासे प्रतिग्रहण होता है वह नीललेश्याका जघन्य प्रतिग्रहस्थान उससे अनन्तगुणा है। कृष्णका जघन्य संक्रमस्थान और जघन्य कृष्णस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। नीलका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है। कृष्णका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है। नीलका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है। कृष्णका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनंतगुणा है। नीलका उत्कृष्ट संक्रमस्थान और उत्कृष्ट नीलस्थान दोनों ही तुल्य व अनंतगुणे हैं। कृष्णका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनंतगुणा है। उत्कृष्ट कृष्णलेश्यास्थान अनंत- गुणा है। इस प्रकार कृष्ण और नील लेश्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

यहां नील और कापोत लेश्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहके अल्पबहुत्व कथन करते हैं। यथा- जैसे कृष्ण और नील लेश्याओंके सम्बन्धमें कथन किया है वैसे ही कापोत और नील लेश्याओंके सम्बन्धमें भी कथन करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि कापोतलेश्याको आदि करके यह कथन करना चाहिये। इस प्रकार नील और कापोत लेश्याओंके संक्रम-प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब कापोत और तेज लेश्याओंके आश्रयसे उक्त अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा- कापोतलेश्याका जघन्य संक्रम और जघन्य स्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं। तेजलेश्याका जघन्य स्थान और जघन्य संक्रम दोनों ही तुल्य व उनसे अनन्तगुणे हैं। कापोतका जघन्य प्रति- ग्रहस्थान अनन्तगुणा है। तेजका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है। कापोतका उत्कृष्ट संक्रम- स्थान अनन्तगुणा है। तेजका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनन्तगुणा है। कापोतका उत्कृष्ट प्रति-

✠ अ-काप्रत्योः 'संकमदिपडिग्गह' ताप्रतौ 'संकम (दि) पडिग्गह' इति पाठः।

ट्ठाणमणंतगुणं। काऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। तेऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। काऊए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। तेऊए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। एवं तेउ-काऊणं संकम-पडिग्गहप्पाबहुअं समत्तं।

तेउ-पम्माणं संकम पडिग्गहप्पाबहुअं वुच्चदे। तं जहा- तेऊए जहण्णयं ट्ठाणं थोवं। तेऊए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो। पम्माए जहण्णयं ट्ठाणं संकमो च दोण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। तेऊए जहण्णयं संकमट्ठाणमणंतगुणं। पम्माए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो। तेऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। पम्माए उक्कस्सओ संकमो अणंतगुणो। तेऊए उक्कस्सओ संकमो उक्कस्सयं च ट्ठाणमणंतगुणं। पम्माए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। पम्माए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। एवं तेउपम्माणं संकम-पडिग्गहप्पाबहुअं समत्तं।

संपहि पम्म-सुक्काणं वुच्चदे। तं जहा- पम्माए जहण्णयं ठाणं थोवं। पम्माए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो। सुक्काए जहण्णओ संकमो जहण्णयं ट्ठाणं च दोण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। पम्माए जहण्णओ संकमो अणंतगुणो। सुक्काए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो। पम्माए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। सुक्काए उक्कस्सओ संकमो अणंतगुणो। पम्माए उक्कस्सयं ट्ठाणं संकमो च अणंतगुणो। सुक्काए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो। उक्कस्सयं सुक्कलेस्सट्ठाणमणंतगुणं। एवं ति-चदु-पंच-छसंजोगाणं पि जाणिदूण अप्पाबहुअं कायव्वं एवं लेस्सपरिणामे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

ग्रहस्थान अनन्तगुणा है। तेजका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। कापोतका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। तेजका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। इस प्रकार तेज और कापोत लेश्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

तेज और पद्म लेश्याओंके संक्रम व प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा- तेजका जघन्य स्थान स्तोक है। तेजका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। पद्मका जघन्य स्थान और संक्रम दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। तेजका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है। पद्मका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। तेजका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। पद्मका उत्कृष्ट संक्रम अनन्तगुणा है। तेजका उत्कृष्ट संक्रम और उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। पद्मका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। पद्मका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। इस प्रकार तेज और पद्म लेश्याओंके संक्रम-प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब पद्म और शुक्ल लेश्याओंके प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा- पद्मका जघन्य स्थान स्तोक है। पद्मका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। शुक्लका जघन्य संक्रम और जघन्य स्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। पद्मका जघन्य संक्रम अनन्तगुणा है। शुक्लका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। पद्मका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। शुक्लका उत्कृष्ट संक्रम अनन्तगुणा है। पद्मका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। शुक्लका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है। उत्कृष्ट शुक्ललेश्यास्थान अनन्तगुणा है। इस प्रकार तीन, चार, पांच और छह संयोगके भी अल्पबहुत्वका कथन जानकर करना चाहिये। इस प्रकार लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।